

प्रिय रज़ा साहेब,

आपसे मुलाकात इतनी सुकूनदायी रही कि मैं
बयान नहीं कर सकता जानिन जी से मिलना भी सुखद रहा
बिल्कुल बड़े जैसा अपनत्व प्यार चिंतने, ठीक ऐसा ही
जैसा कि आप अपने परिवार के साथ अनुभव करते हों।
बहुत ही कम लोग इतना प्यार पाते हैं। मैं अपने आपको
सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे इतने सारे लोग प्यार
करने वाले मिले हैं। आपको अपना नया काम नहीं दिखा
सका इसका गम दूर करने के लिए मैं आपको अपने नये
काम के कुछ खास चित्र भेज रहा हूँ आशा है आप अपना
बामदा मेरे काम के बारे में एक केटलॉग लिखने का पूरा करेंगे।
मेरे खास चित्र आपको एक छोटा सा अंदाज़ दे सकेंगे कि
मैं आजकल क्या कर रहा हूँ। देखिये निराश ना कीजियेगा।

भोपाल में ~~अब~~ Alliance France

के सहयोग से एक फ्रेंच फोटोग्राफी की प्रदर्शनी भारत भवन में
चल रही है उनसे मैंने फ्रेंच सीखने की बात कर ली है
इसी माह के आखिरी सप्ताह से पाँच सप्ताह का एक Course
(course शुरू हो रहा है जिसे मैं ज्वाइन कर रहा हूँ और अगर
(इंशाल्लाह) मेरा बस चला तो अगला रवत आपको फ्रेंच में
ही लिखूंगा। इस पाँच सप्ताह के कोर्स के बाद मैं से उनके
नियमित पढ़ाई के कोर्स हूँ मैं उन्हें भी कर दूँगा। मैं चाहूँगा
कि फ्रेंच एकदम पक्की हो।

इसके साथ ही आपको मैं एक थोड़ी सी तकलीफ भी दे रहा हूँ। यहाँ भोपाल में एक सज्जन से मुलाकात हुई थी। वे फ्रांस से आये थे। दूसरे दिन वे घर भी आये थे मेरे चित्र देखने, उन्हें मेरा एक चित्र पसंद आया तो उन्होंने कहा कि आपका यह चित्र मैं खरीदना चाहता हूँ किंतु बदले में यदि आप फ्रांस से कुछ मँगवाना चाहते हैं तो मैं उतनी कीमत की कोई भी वस्तु भेज सकता हूँ। मैंने उनसे Acrylic (OLYPS) भेजने को कहा था। उन्होंने करवरी अंत तक भेजने को कहा था।

अपनी व्यस्तता के कारण वे शायद अभी तक नहीं भेज पाये हैं किंतु शायद शीघ्र ही भेजने वाले होंगे।
तो क्या आप उन्हें मात्र आगह करेंगे? उनका नाम { TURPIN GERARD
पता { Ministry of Culture
French Museum
Louvre, 75041 PARIS

अगर उन्होंने भेजा नहीं है तो उसमें मैं एक पेन्टिंग खोलकर चाहता हूँ वे अगर भेज सकें तो बड़ी कृपा होगी। मैं जापान से एक खोलकर लाया था और जो अब खत्म हो चला। यहाँ मैं बम्बई और दिल्ली दोनों जगहों पर दूँ चुका हूँ किंतु नहीं मिला। या वे सिर्फ पेन्टिंग खोलकर ही भेज दें रंग मैं यहाँ जो उपलब्ध है उसी से काम चला लूँगा। किंतु यदि पेन्टिंग खोलकर भिज जाते हैं तो मेरा काफी बड़ा काम हो जायेगा। इसे आप बिल्कुल अन्याय ना लें। मुझे बड़ी शर्म महसूस हो रही है।

अभी पिछले दिनों काफी अच्छा काम किया है। अकबर परमसीजी ने 20 प्रिंट्स निकालने के लिए कहा है सो मैं पहली बार ग्राफिक तकनीक में काम कर रहा हूँ। प्रिंट्स बहुत सुंदर निकल रहे हैं। अभी तक काम मेरे हिसाब से चल रहा है किंतु धीरे-धीरे मैं अपने चितों को सभी प्रकार की तकनीक से स्वतंत्र कर अपने सहज शरीर स्वरूप में रूपा करने की कोशिश करना चाह रहा हूँ। रेसिमे कलें तक मैं सफल होता हूँ।

काफी लिव डाटा है। जानिनजी को मेरा चरण स्पर्श। उनसे मिलना सुखद है। आपने बिगरेट काम कर दी होगी।

आपका

— जाली —

आरिवलेहा

(29 मार्च ओपाल से)